निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

मई 2016

प्रमुख सम्पादक
दीक्षा बिष्ट

सम्पादक
बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी
पंकज गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

सियाचिन

ग्लेशियर से तो आप सभी लोग परिचित होंगे ही, वर्षों से सियाचिन ग्लेशियर पर पाकिस्तान और चीन अपना-अपना आधिपत्य स्थापित करने की होड़ में वहां हलचल मचाते रहते हैं। यही कारण रहा है कि देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये किसी न किसी बटालियन के लगभग 3000 सैनिक हमेशा वहां तैनात रहते हैं। सियाचिन ग्लेशियर हिमालय की कराकोरम रेंज में भारत पाक नियंत्रण रेखा के समीप स्थित है। यह विश्व का दूसरा सबसे बड़ा और कराकोरम रेंज के पांच ग्लेशियरों में सबसे बड़ा ग्लेशियर है, जिसकी लम्बाई लगभग 70 किमी. है।

सियाचिन ग्लेशियर सबसे ऊँचाई पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई लगभग 5,753 मीटर है। इसी ग्लेशियर पर भारत के साथ पाकिस्तान और चीन की सीमाएं मिलती हैं। जिस कारण इन देशों से भारत में घुसपैठ रोकने के प्रयास के लिये सेनाओं की तैनाती आवश्यक मानी जाती है। इतनी ऊँचाई पर होने के कारण यहां का तापमान -50° सेल्सियस तक पहुंच जाता है। दुर्गम परिस्थितियों के बावजूद यहां पर सैनिकों की तैनाती एक मजबूरी बन गई है। इसी मजबूरी के कारण हमारे सैनिक -40° सेल्सियस तापमान पर भी मुस्तैद रह कर लगभग पिछले तीस सालों से सीमा की निगरानी में जुटे हैं। न कोई हरियाली, न कोई पेड़-पौधे, न किसी जीव की कल्पना, बस चारों ओर बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाएं, दुर्गम परिस्थितियां और सीमित संसाधन। ऊपर से कब दुश्मन धावा बोल दे पता नहीं? इसलिये इन विकटतम परिस्थितियों में भी मुस्तैदी के साथ सरहद की रक्षा करना सैनिक अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। सैनिकों के लिये भोजन और आवश्यक सामान की आपूर्ति का जरिया केवल हेलिकॉप्टर है। मौसम खराब हो तो हेलिकॉप्टर का पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है, पर हमारे जवान हैं कि 140 किमी. की गति से चलने वाली सर्द हवाओं और बर्फीले तूफानों का सामना करते हुये किस हिम्मत के साथ हमारी सुरक्षा करते हैं। ये बात तब सामने आयी जब 3 फरवरी 2016 को 19,600 फुट की ऊँचाई पर बर्फीली चट्टान के खिसकने से सोनम नामक चौकी चपेट में आ गई और उस चौकी पर तैनात मद्रास रेजीमेंट के एक जूनियर अधिकारी और 8 सैनिक अकाल मृत्यु के ग्रास बन गये जबकि 6 दिन बाद बर्फ में दबे एक सैनिक के जीवित मिलने से रोशनी की किरण दिखाई दी, पर अंततः वे भी काल के ग्रास में समा गये। इन सभी दिवंगत सैनिकों को विज्ञान प्रगति परिवार की ओर से भावभीनी श्रृद्धांजलि।

इन दुर्गम परिस्थितियों में रहने वाले सैनिकों के बचाव के लिये वैसे तो विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बदौलत कई चीजें विकसित की गई हैं पर इसके वाबजूद भी वहां पर तैनात सैनिक बहुत ही भारी कपड़े पहनते हैं। इन सैनिकों के असमय काल कवलित होने के बाद एक सुझाव आया है कि इसरो द्वारा विकसित अंतरिक्ष तकनीक से इन सैनिकों का जीवन बचाया जा सकता है।

इसरो द्वारा विकसित तकनीकों से भारतीय सैनिकों के जीवन की काफी मुश्किलें कम की जा सकती हैं और उनकी जिंदगियां बचाई जा सकती हैं, क्योंकि अधिकारिक रिकार्डों से पता चला है कि 1984 से अब तक लगभग 1000 सैनिक सियाचिन में मारे जा चुके हैं इनमें से केवल 220 सैनिकों की मौत युद्ध के कारण हुई बाकी की खराब मौसम और सर्दी की मार से।

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।